अध्याय–द्वितीय
संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

अध्याय द्वितीय

D – 200

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.0 भूमिका

साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक अनुसंधान की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण कदम है चाहे वो किसी भी क्षेत्र का हो। शोध कार्य के अंतर्गत साहित्य का पुनरावलोकन एक प्रारंभिक अनिवार्य प्रक्रिया है क्योंकि यह व्याख्या की जाने वाली समस्या की पूरी तस्वीर प्रकट करता है। संबंधित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से संबंद्ध उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोषों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबंधों एवं अभिलेखों आदि से है जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है। संबंधित साहित्य के अध्ययन के बिना अनुसंधानकर्ता का कार्य अंधेरे में तीर चलाने के समान होगा। इसके अभाव में उचित दिशा में अनुसंधान को नहीं बढ़ाया जा सकता। जब तक उसे ज्ञात न हो कि उस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है किस विधि से कार्य किया गया है तब तक वह न तो समस्या का निर्धारण कर सकता है और न ही इस दिश में सफल हो सकता है।

2.1 साहित्य के पुनरावलोकन से लाभ

1. जो अनुसंधान कार्य पहले अन्य अनुसंधानकर्ता द्वारा किया जा चुका है, वह पुनः किया जा सकता है।

2. ज्ञान के क्षेत्र के विस्तार के लिए आवश्यक है कि अनुसंधानकर्ता को यह ज्ञान हो कि ज्ञान की वर्तमान सीमा कहां पर है। वर्तमान ज्ञान की जानकारी के पश्चात् ही ज्ञान आगे बढ़ाया जा सकता है।

3. पूर्व साहित्य के पुनरावलोकन से अनुसंधानकर्ता को अपने अनुसंधान के विषय की रचना के संबंध में अर्न्तदृष्टि प्राप्त हो सकती है।

4. पूर्व अनुसंधानों के अध्ययन से अन्य संबंधित नवीन समस्याओं का पता लगता है।

5. सत्यापन करने के लिए कुछ अनुसंधानों को नवीन दशाओं में करने की आवश्यकता होती है।

बुद्धिसागर, मिना, सनसनवाल डि.एन. 1991 ने बी.एड प्रशिक्षणार्थी की उपलब्धि –

शिक्षण व्यवसाय के प्रति व्यवहार बुद्धि अभिवृत्ति और उनके अन्तर संबंध को

असर का अध्ययन

उदिष्ट – प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षण व्यवसाय के प्रति व्यवहार, बुद्धि, अभिवृत्ति का असर एवं उपलब्धि पर उनके अन्तर संबंधों का अध्ययन करना।

निष्कर्ष :– प्रशिक्षणार्थियों की उपलब्धि पर उनके अभिवृत्ति का कोई प्रभाव नहीं पड़ा जबकि बुद्धि का उपलब्धि पर प्रभाव दिखाई देता है।

मिस्त्री अी.सी. ने (1988) ग्रामीण, शहरी और बिन गुजराती कॉलेज और माध्यमिक स्कूल के शिक्षकों की अभिवृत्ति, मूल्य और व्यक्तित्व के लक्षणों का तुलनात्मक अध्ययन किया। इसमें उन कारकों को खोजा गया जिनसे मूल्यों, अभिवृत्तियों और शहरी, ग्रामीण तथा अनौपचारिक गुजराती शिक्षकों के जीवन जीने के तरीकों में अन्तर पाया गया। इस अध्ययन हेतु आलपोर्ट बर्नन लिण्डजे की प्रश्नावली एडवर्ड की व्यक्तिगत महत्व अनुसूची और मुर्रे की व्यक्तिगत आवश्यक परीक्षण गुजरात के शहरी और ग्रामीण शिक्षकों को न्यादर्श के रूप में यादृच्छिक विधि से चुना गया। 111 शिक्षकों को शामिल किया गया। अनौपचारिक गुजराती शिक्षकों का एक नियंत्रित ग्रुप भी न्यादर्श के रूप में लिया गया। परिणाम यह आया कि जो गुजराती नहीं थे वे अधिक आत्मकेन्द्रित और अधिक अध्ययनशील थे जबकि ग्रामीण–शहरी गुजराती शिक्षक केन्द्रित थे और धार्मिक थे।

महेश्वरी पी.सी. ने (1989) रोहिलखंड विद्यापीठ के सामान्य, पिछड़े वर्ग, अनुसूचित जाति के शिक्षकों–प्रशिक्षकों का अध्यापन अभिवृतित तथा मूल्य,

बुद्धि, लिंग के संबंध का अध्ययन किया। जिसका मुख्य उद्देश्य शिक्षक प्रशिक्षकों में मूल्य एवं अध्यापन अभिवृत्ति के संबंध का अध्ययन करना था। उपरोक्त वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षकों में लिंगभेद का अध्यापन अभिवृत्ति पर प्रभाव का अध्ययन करना था।

रोहिलखंड विद्यापीठ के 10 कॉलेजों से सामान्य वर्ग के 426 शिक्षक-प्रशिक्षक पिछड़े वर्ग के 95 शिक्षक-प्रशिक्षक, अनुसूचित जाति के 97 शिक्षक-प्रशिक्षक को न्यादर्श के रूप में चुना गया। प्रदत्तों के संकलन के लिए निम्न उपकरणों का उपयोग किया गया।

1. अहलूवालिया एस.पी. द्वारा निर्मित शिक्षकों की अभिवृत्ति सूची।
2. आर.के. टंडन द्वारा निर्मित समूह बुद्धि परीक्षणं
3. आर.के. ओझा द्वारा निर्मित मूल्य परीक्षण प्रदत्तों के विश्लेषण के

लिए 'टी' परीक्षण तथा सहसंबंध का प्रयोग किया गया।

इस अध्ययन का निष्कर्ष यह आया कि -

1. अनुसूचित जाति एवं पिछड़े वर्ग की अपेक्षा सामान्य वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षकों में अध्यापन अभिवृत्ति प्राप्तांक में सार्थकता पायी गयी।
2. स्त्री-पुरूष शिक्षक-प्रशिक्षकों में अध्यापन अभिवृत्ति के अंतर में सार्थकता नहीं पायी गयी।
3. सामान्य वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षकों में अन्य दो वर्गो की अपेक्षा अध्यापन अभिवृत्ति अधिक देखने को मिली।

गणपति, दास (1992) ने

शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के आत्म संप्रत्यय एवं अध्यापन व्यवसाय संबंधी अभिवृत्ति का अध्ययन किया।

उपरोक्त शोधकार्य में शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की अध्यापन व्यवसाय संबंधी अभिवृत्ति एवं शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों का आत्म संप्रत्यय का अध्यापन व्यवसाय संबंधी अभिवृत्ति का शोध करना यह मख्य उददेश्य है। नौ

अध्यापक महाविद्यालय में से 723 शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों का न्यादर्श के रूप में चयन किया गया । प्रदत्तों के संकलन हेतु अहुवालिया की शिक्षक अभिवृत्ति सूची एवं आत्म संप्रत्यय मापनी का उपयोग किया गया। प्रदत्तों के विश्लेषण के लिये 't' परीक्षण, पिअरसन की गुणांक सहसंबंध का प्रयोग किया गया। उपरोक्त शोध कार्य में यह पाया गया कि, महिला एवं पुरूष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में अध्यापन व्यवसाय संबंधी अनुकूल अभिवृत्ति है।

पाण्डे एम और मैखूरी आर (1999) ने प्रभावशाली और प्रभावहिन शिक्षकों का शिक्षण व्यवसाय अभिवृत्ति का अध्ययन किया।

इस शोध का मुख्य उद्देश्य शिक्षकों की प्रभावशीलता तथा अप्रभावशीलता का अध्यापन संबंधी अभिवृत्ति में आयु व अनुभव के आधार पर अध्ययन करना था।

न्यादर्श के साथ में पूरी तेहरी जिले के 100 शिक्षकों को माध्यमिक स्कूल से यादृच्छिक विधि से चयनित किया गया है। प्रदत्त संकलन के लिये शिक्षक प्रभावशाली मापनी कुमार और मुथ्या तथा अध्यापन अभिवृत्ति मापनी (कटिया व वैनर) का प्रयोग किया गया। प्रदत्त संकलन के विश्लेषण के लिये मध्यमान, प्रमाणित विचलन और 't' परीक्षण किया गया।

अधिक तथा कम अनुभव वाले प्रभावशाली शिक्षकों की अध्यापन संबंधी अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया जबकि अधिक प्रभावशाली अनुभव वाले शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय संबंधी अभिवृत्ति सकरात्मक पायी गयी। कम अनुभव प्रभावशाली शिक्षकों से और नये अप्रभावशाली शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय संबंधी अभिवृत्ति निषेधात्मक पायी गयी।

पाण्डा, बी.बी. (1992) ने आसाम और उड़िसा के कॉलेज शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय एवं कार्य संतुष्टि के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया।

उदिष्ट :– (1) आसाम और उड़िसा के कॉलेज शिक्षकों का शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति और विभिन्न वर्गो जैसे की लिंग, अनुभव, स्थान, स्तर के आधार पर अध्ययन करना। (2) आसाम और उड़िसा के कॉलेज शिक्षकों का

कार्य संतुष्टि की डिग्री का लिंग, अनुभव, स्थान तथा स्तर के आधार पर अध्ययन करना। (3) आसाम और उड़िसा के कॉलेज शिक्षकों का शिक्षण व्यवसाय और कार्य संतुष्टि की अभिवृत्ति के संबंध का अध्ययन करना।

पद्धति :- वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग किया है।

उपकरण :- आर.एस. आरब्रॉक (1962) निर्मित ''शिक्षक अध्यापन अभिवृत्ति सूची का उपयोग किया गया।

संशोधक द्वारा बनायी गयी और प्रमाणित की गयी व्यवसाय संतुष्टि सूची का उपयोग किया गया।

निष्कर्ष :- (1) आसाम और उड़िसा के ज्यादातर कॉलेज शिक्षकों की अभिवृत्ति शिक्षण व्यवसाय के प्रति है। दोन्ही राज्यों के 25 प्रतिशत कॉलेज शिक्षकों लिंग, अनुभव स्थान, स्तर के आधार पर भी शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति रखते है। (2) आसाम और उड़िसा के कालेज शिक्षकों में लिंग अनुभव स्थान तथा स्तर के आधर पर शिक्षण व्यवसाय अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है।

पाण्डे, उषा (1988) ने महिल/ शिक्षक प्रशिक्षणार्थी की शिक्षण व्यवसाय से संबंधित अध्यापन अभिवृत्ति का अध्ययन किया।

निष्कर्ष से पता लगता है कि महिला शिक्षक को अध्यापन व्यवसाय में अधिक रूची है। उनके लिये शिक्षण व्यवसाय एक सुवर्ण संधी होती है। क्योंकि दूसरा व्यवसाय जल्द से नहीं मिल पाता। इसलिए अधिक महिला को शिक्षण अध्यापन व्यवसाय में अधिक रूची है।

रेड्डी बालक्रिष्ना पी (1989) ने प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों का कार्य संतुष्टि, शिक्षण व्यवसाय अभिवृत्ति का अध्ययन किया।

उदिष्ट :- व्यवसाय संतुष्टि स्तर अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति और व्यावसाय अभिरूची के स्तर का अध्ययन। (2) लिंग वैवाहिक स्तर, शैक्षिक योग्यता

कुंटुब का आकार, अनुभव, उम्र तथा व्यक्तित्व कारक के आधार पर व्यवसाय के संबंधों का अध्ययन करना।

पद्धति :– 300 प्राथमिक शिक्षक पर यह अभ्यास किया गया। बहुस्तरीय स्तरीकृत यादृच्छिक निर्देशन पद्धति का उपयोग किया गया।

उपकरण :– व्यावसाय संतोष सूची, शिक्षक अध्यापन अभिवृत्ति मापन सूची, कॉटल 16 पी.एफ. प्रश्नावली, व्यवसाय अभिरूची स्केल का उपयोग किया गया।

निष्कर्ष – (1) अपने व्यवसाय के प्रति सभी शिक्षक संतुष्ट है (2) व्यवसाय के विविध कारकों का अभ्यास करने से पता चलता है की आठ कारकों के प्रति शिक्षकों में व्यवसाय संतुष्टि देखने को मिलती है जबकि सात कारकोकं के प्रति शिक्षकों में असंतुष्टि दिखाई देती है। (3) व्यक्तित्व के चार कारकों और व्यवसाय सूची की जो शैक्षिक योग्यता के आधार पर वर्गीकृत की गयी है में सार्थक अंतर है।

रामक्रिष्णा, डी. (1980) ने कॉलेज शिक्षकों के व्यवसाय संतुष्टि, शिक्षण अध्यापन अभिवृत्ति एवं व्यवसाय सहभाग का अध्ययन किया।

उदिष्ट – (1) कॉलेज शिक्षकों का व्यवसायन संतुष्टि स्तर पर अध्ययन करना। (2) शिक्षकों के व्यक्तिक, जनतांत्रिक, चर एवं व्यवसाय संतुष्टि का अध्ययन करना। (3) शिक्षण अध्यापन अभिवृत्ति एवं शिक्षण व्यवसाय संतुष्टि के संबंध का अध्ययन करना। (4) व्यवसाय संतुष्टि एवं व्यवसाय सहभाग का संबंध का अध्ययन करना।

पद्धति – 400 शिक्षक (शासकीय, खाजगी) लिये गये। महिला शिक्षक एवं पूरूष शिक्षक भी लिये गये। न्यादर्श बहुस्तरीय यादुच्छिक विधि से लिये गये।

उपकरण – व्यवसाय संतुष्टि सूची, शिक्षण अध्यापन अभिवृतित मापन सूची, व्यवसाय सहभागी सूची, सामाजिक, आर्थिक स्तर सूची, का उपयोग किया इसमें प्रसरण विश्लेषण, टी टेस्ट, काय–वर्ग सांख्यकीय विधि का उपयोग

निष्कर्ष – कॉलेज के शिक्षक अपने व्यवसाय में संतुष्ट थे। खाजगी कॉलेज के शिक्षक शासकीय कॉलेज के शिक्षक से अधिक संतुष्ट थे। महिला शिक्षिका, पुरूष शिक्षक से अपने व्यवसाय में अधिक संतुष्ट थे।

रेड्डी, बुम.एन (1991)

आंध्रप्रदेश के माध्यमिक शिक्षकों में अध्यापन अभिक्षमता एवं अभिवृत्ति की अध्ययन।

उपरोक्त शोधकार्य में शिक्षपकों के लिंग, आयु विभाग एवं प्रवर्ग का अध्यापन अभिवृत्ति पर परिणाम परीक्षण करना यह मुख्य उद्देश्य है। नियमित बी.एड. के 332 प्रशिक्षणार्थी एवं 80 माध्यमिक शिक्षकों को न्यादर्श के रूप में चयन किया गया। प्रदत्तों संकलन हेतु TAT (Tematic appriciation Test) एवं अध्यापन अभिवृत्ति सूची का उपयोग किया गया। प्रदत्तों के विश्लेषण के लिए मध्यमान, प्रमाणित 't' अनुपात, सहसंबंध और काय वर्ग परीक्षण का उपयोग किया गया।

रेनॉल्ड (1976) रेटर एवं अन्य (1979) मोर्टीमोंर एवं अन्य (1988) के अनुसार, ''कुछ साध्य ऐसे है जिससे कुछ महत्वपूर्ण सामाजिक विभिन्नताएं। प्रभावी परिणाम जैसे उपस्थित, व्यवहार तथा अभिवृत्ति का विवरण है।

श्रीनिवास, व्ही. (1992) : ने प्राथमिक विद्यालय शिक्षकों का व्यक्तिमत्व गुण और शिक्षण अध्यापन व्यवसाय के प्रति दृष्टिकोण।

उदिष्ट :– (1) प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों का अध्यापन दृष्टिकोण का **मापन करना :–** सामूहिक अनुभव और संस्थान के व्यवस्थापन के प्रकार (2) लिंग, सामूहिक अनुभव और व्यवस्थापन के प्रकार इनके आधार पर प्राथमिक शिक्षकों का दृष्टिकोण के प्रकार इनके आधार पर प्राथमिक शिक्षकों का दृष्टिकोण की सार्थकता मापन करना। (3) प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों का व्यक्तित्व गुणों का लिंग, अनुभव, समुदाय और व्यवस्थापन के प्रकार के

पद्धति :–

स्तरीय यादृच्छिक नमूना विधी का उपयोग किया।

उपकरण – व्यक्तिक माहिति सूची, शिक्षक अभिवृत्ति सूची स्वयं शोधकर्ता निर्मित प्रमाणिकृत एवं बी.सी. मुथ्या द्वारा निर्मित बहुउदिपक व्यक्तित्व प्रश्नावली का उपयोग किया। इसमें मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, टी मान सहसंबंध निकाला गया।

निष्कर्ष – शिक्षक अध्यापन अभिवृत्ति पर लिंग, शिक्षा अनुभव एवं समूह का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। शासकीय विद्यालय शिक्षक और अनुदानीत विद्यालय शिक्षक के अध्यापन अभिवृत्ति में सार्थक अंतर है। सहानुभूति, अंर्तमुखी का महिला शिक्षक पर प्रभाव पड़ता है। सहानुभूति एवं न्यूट्रीसियम इन गुण का शासकीय और अनुदानीय विद्यालय शिक्षक में सार्थकता है।

सिंग.एस.के. (1988) : ने शिक्षक के कक्षा में शाब्दीक संवाद एवं शिक्षक अध्यापन अभिवृत्ति के संबंध का अध्ययन किया।

उदिष्ट – शिक्षकों के व्यवस्थित प्रक्षेपण का विकास एवं प्रेक्षपण व्यवहार और शिक्षण अध्यापन अभिवृत्ति इनके बीच संबंध निर्धारित करना।

पद्धति – इसमें प्रश्न–उत्तर विधि का उपयोग किया। 500 बी.एड. छात्र अध्यापक को चुना गया था।

उपकरण – मिनेसोटा शिक्षक अभिवृत्ति सूची एवं फ्लॉण्डरस की वर्गवारी विश्लेषण पद्धति का उपयोग किया गया था।

निष्कर्ष – शिक्षक अध्यापन अभिवृत्ति के संबंधित प्रश्न अनुपात में शिक्षकों के अध्यापन, विषय ग्रुप चर्चा में सार्थकता पाया गया। शिक्षक के अध्यापन अभिवृत्ति और कक्षाध्यापन में शाब्दिक संवाद में सार्थकता पाया गया।

सरन, एस.ए ने शिक्षकों का शिक्षण अध्यापन अभिवृत्ति एवं व्यक्तित्व कारक से संबंधि शिक्षा स्तर एवं अनुभव के आधार पर अध्ययन किया गया।

उदिष्ट – समायोजन स्तर, उपलब्धि की गरज इन्डूरन्स एवं शिक्षा स्तर पर शिक्षकों का अध्ययन करना था।

निष्कर्ष – शिक्षकों का शिक्षण अध्यापन अभिवृत्ति का दृष्टिकोण सकारात्मक था। जिन शिक्षकों का दृष्टिकोण सकारात्मक था उनकी रूची मेकॉनिकल क्षेत्र में अधिक थी। जिन शिक्षकों का दृष्टिकोण नकरात्मक था उनकी रूची ऑग्रीकल्चर एवं स्पोर्ट क्षेत्र में थी। शिक्षकों में शिक्षा अनुभव एवं समायोजन में सार्थक अंतर नहीं था।

सक्सेना, ज्योत्सना. (1995) ने शिक्षकों के प्रभावशाली का संबंध उन के समायोजन व्यवसाय संतुष्टि एवं शिक्षण व्यवसाय से संबंधित अध्यापन अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

उदिष्ट – (1) प्रभावशाली शिक्षक पहचानना। (2) शिक्षक का प्रभाव एवं समायोजन में संबंध, शिक्षक का प्रभाव एवं व्यवसाय संतुष्टि शिक्षक का प्रभाव एवं अध्यापन व्यवसाय में अभिवृत्ति इनका संबंध देखना था।

पद्धति – 545 शिक्षक ग्रामीण क्षेत्र के 33 सेकण्डरी विद्यालयों में लिये गये थे । शहरी क्षेत्र के 22 विद्यालय को चुना था। न्यादर्श का चयन यादुच्छिक विधि से किया गया था।

उपकरण :– कट्टी एवं वनूर द्वारा निर्मित "शिक्षक अध्यापन अभिवृत्ति सूची" का उपयोग किया था। इसमें सहसंबंध एवं टी टेस्ट सांख्यिकीय प्रयुक्त विधि का उपयोग किया गया है।

निष्कर्ष – प्रभावशाली एवं अप्रभावशाली शिक्षकों में समायोजन और अपने व्यवसाय में संतुष्ट है तथा शिक्षण अध्यापन व्यवसाय अभिवृत्ति के प्रति सकरात्मक दृष्टिकोण है। (2) शहरी, शासकीय, महिला शिक्षक, अधिक अनुभव, अप्रशिक्षित शिक्षकों का समायोजन ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षकां में से अधिक अच्छा है। पदव्युत्तर शिक्षक का समायोजन पदवीधारक शिक्षक से अधिक अच्छा है। ग्रामीण क्षेत्र के प्रभावशाली शिक्षक अपने व्यवसाय में शहरी क्षेत्रों के शिक्षक के तुलना में अधिक संतुष्ट है।

तपोधन, एल.एन. (1991) ने गुजरात राज्य के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण अध्यापन व्यवसाय के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन किया।

उदिष्ट – लिंग, क्षेत्र, जात, योग्यता, विद्यालय के प्रकार, वैवाहिक स्तर, शिक्षण के विविध सुविधा, उम्र एवं अनुभव के आधार पर शिक्षकों के अध्यापन व्यवसाय के प्रति दृष्टिकोण कैसा है यह जानना ।

पद्धति – मानकी (नॉरमेटीव्ह) सर्वे विधि से 224 विद्यालय 19 जिला में चयन किया गया।

1644 पुरूष शिक्षक, 942 महिला शिक्षक का चयन किया गया। स्वयं शोधकर्ता ने लिर्कट टाईप अभिवृत्ति सूची प्रमाणीकृत की थी। बाद में 40 विद्यालय का चयन किया। ऑलन एडवर्ड के मार्गदर्शन के अनुसार मुद्दे विश्लेषण किया। अंतिम उपकरण में 30 कथन का समावेश किया था।

निष्कर्ष – लिंग, क्षेत्र (शहरी/ग्रामीण) एवं जात (BC/Non - BC) इनका अध्यापन व्यवसाय अभिवृत्ति पर अधिक प्रभाव पड़ा। योग्यता शिक्षकों के अध्यापन व्यवसाय पर कोई प्रभाव नहीं दिखाई दिया। क्षेत्र एवं जात, क्षेत्र एवं योग्यता, जात एवं योग्यता लिंग, क्षेत्र और जात, लिंग, जात और योग्यता इनके बीच अध्यापन व्यवसाय अभिवृत्ति के प्रति कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

वफादार, ए.जे. (1979) : ने प्राथमिक शिक्षण को जीविका के रूप में चुनाव करने के लिये उत्तरदायी घटकों पता लगाने के लिये एक अध्ययन किया। इसमें अफगानिस्तान और भारत के शिक्षकों का तुलनात्मक अध्ययन किया।

प्रतिदर्श मे 300 शाला शिक्षकों को चुना गया था। जिसमें भारत में 150 शिक्षक थे। 150 अफगानिस्तान के शिक्षक थे।

शिक्षण व्यवसाय को अपनाने के लिए उत्तरदायी कारणों का पता लगाने के लिये प्रश्नावलियों एवं साक्षात्कारों का उपयोग किया गया।